भा कृ अनु प – के मा शि सं, मुंबई में दिनांक 26 से 30 सितंबर 2024 तक ओडिशा विभागीय अधिकारियों (बैच-2) के लिए "जलीय कृषि तालाब प्रथाओं में पोषण और फ़ीड प्रबंधन" पर एक्सपोजर-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भा कृ अनु प – के मा शि सं, मुंबई द्वारा दिनांक 26-30 सितंबर 2024 तक ओडिशा विभागीय अधिकारियों (बैच-2) के लिए "जलीय कृषि तालाब प्रथाओं में पोषण और फ़ीड प्रबंधन" पर 5 दिवसीय विशेष एक्सपोजर-सह-प्रशिक्षण आयोजित किया गया । कार्यक्रम में ओडिशा के कुल 20 विभागीय अधिकारियों ने भाग लिया । कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ एन.पी. साहू, संयुक्त निदेशक और डॉ के.एन. मोहंता, विभागाध्यक्ष, मत्स्य पोषण, जैव रसायन एवं कायिकी विभाग , द्वारा किया गया । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सिकंदर कुमार,वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं डॉ. मनीष जयंत,वैज्ञानिक थे । जलीय कृषि में अनुप्रयुक्त पोषण पर व्याख्यान देने वाले प्रमुख संसाधन व्यक्ति डॉ. के.एन. मोहंता, डॉ. सुबोध गुप्ता, डॉ. आशुतोष देव, डॉ. प्रेम कुमार, डॉ. सिकंदर कुमार और डॉ. टिंसी वर्गीस थे । अपने उद्घाटन भाषण में, डॉ. साहू ने ओडिशा राज्य में जलीय आहार के उपयोग की वर्तमान स्थिति के बारे में पूछताछ की और बेहतर जलीय कृषि उत्पादन के लिए खेत में बने चारे में सुधार और स्थानीय रूप से उपलब्ध चारा सामग्री का उपयोग करके चारा तैयार करने का सुझाव दिया । समन्वयक डॉ. सिकंदर कुमार ने पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा बताई । डॉ. मोहंता ने वाणिज्यिक खाद्य और सजावटी मछलियों की पोषक तत्वों की आवश्यकताओं, लागत प्रभावी चारा फॉर्मूलेशन और तालाब मछली पालन के अलावा आरएएस, बाइफ्लॉक, पिंजरे और पेन पालन जैसे उच्च घनत्व मछली पालन में चारा प्रबंधन पर व्याख्यान दिए । समापन सत्र की अध्यक्षता निदेशक ,डॉ. रविशंकर सी. एन. ने की और उन्होंने 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और प्रशिक्षण पुस्तिका वितरित की । अपने संबोधन में, उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि चारा सबसे महत्वपूर्ण इनपुट है, जो जलीय कृषि में आवर्ती लागत का 60-70% हिस्सा है, और भारत को प्रति इकाई क्षेत्र में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए चारा आधारित जलीय कृषि में अभी लंबा सफर तय करना है । मछली और झींगा के लिए तैरने वाले, डूबने वाले और अर्ध-डूबने वाले चारे का उत्पादन करने के लिए उन्नत चारा उत्पादन तकनीकों सहित कुल 13 व्यावहारिक प्रदर्शन किए गए; 11 सैद्धांतिक कक्षाओं के अलावा प्रशिक्षुओं को चारा परीक्षण और गुणवत्ता आश्वासन का प्रदर्शन भी किया गया । प्रशिक्षुओं के लिए पालघर (महाराष्ट्र) में झींगा पालन फार्म (पंचम फार्म) का एक फील्ड विजिट भी आयोजित किया गया था ताकि वे फीडिंग प्रबंधन और झींगा पालन प्रथाओं को बेहतर ढंग से समझ सकें । प्रशिक्षु प्रशिक्षण से बत संतुष्ट थे और उन्होंने इस तरह के अच्छे प्रशिक्षण के आयोजन के लिए निदेशक डॉ. रविशंकर सी.एन. को धन्यवाद दिया ।

Fig 1: Release of the training manual in the inauguration programme

Fig 2: Production of feed using spheronizer by the trainees

Fig 3: Production of floating feed using the twin screw extruder by the trainees

Fig 4: Production of feed using the single screw extruder by trainees

Fig 5: Visit the Shrimp Culture farm (Pancham Farm) at Palghar (Maharashtra) to learn feeding management and culture practice

Fig 6: Harvest of shrimp, ***Penaeus vannamei*** at Pancham Farm, Palghar (Maharashtra)

Fig7 : Distribution of certificates to the participants by the Director, Dr. Ravishankar CN